

5-सतयुग की वापसी

अध्याय 1: लेने के देने क्यों पड़ रहे हैं?

इस अध्याय में लेखक ने आधुनिक प्रगति और उसके नकारात्मक परिणामों पर विचार किया है, जिसका मूल कारण भाव-संवेदना की कमी को बताया गया है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: आदि कवि वाल्मीकि की करुणा कब और क्यों जाग्रत हुई?

उत्तर: जब उन्होंने क्रौंच पक्षी को घायल अवस्था में विलाप करते देखा, तब उनकी करुणा जाग्रत हुई और उसी क्षण वे आदि कवि बन गए।

2. प्रश्न: भगवान राम ने राक्षसों से पृथ्वी को मुक्त कराने का प्रण क्यों लिया?

उत्तर: ऋषियों के अस्थि-पंजरों का ढेर देखकर उनकी करुणा मर्माहत हो गई, जिसके कारण उन्होंने "निशिचर हीन करौं महि" का प्रण लिया।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, देने की प्रकृति वाले लोगों को क्या कहा जाता है और वे जिस क्षेत्र में रहते हैं, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर: देने की प्रकृति वाली आत्माओं को देवता कहा जाता है। जहाँ ऐसे लोग संगठित होकर रहते हैं, उस क्षेत्र को स्वर्ग कहा जाता है।

4. प्रश्न: आज के युग को अभूतपूर्व प्रगतिशीलता का युग क्यों कहा जाता है?

उत्तर: क्योंकि आज हमारे पास जलयान, वायुयान, रेल, मोटर जैसे तेज वाहन और तार, रेडियो, दूरदर्शन जैसे संचार साधन हैं, जो पहले कभी कल्पना में भी नहीं थे। विज्ञान और बुद्धिवाद के क्षेत्र में भी असाधारण प्रगति हुई है।

5. प्रश्न: तथाकथित प्रगति अपने साथ कौन-सी बड़ी समस्याएँ लेकर आई है?

उत्तर: यह प्रगति अपने साथ प्रदूषण, युद्धोन्माद, खाद्य-संकट, अपराधों की वृद्धि, अस्वस्थता, और कलह जैसी अनगिनत समस्याएँ लेकर आई है।

6. प्रश्न: मनुष्य द्वारा जुटाई गई उपलब्धियाँ भी विपत्तियों में क्यों बदल रही हैं?

उत्तर: इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य भाव-संवेदनाओं का महत्त्व भूल गया है। भाव-संवेदना के बिना वह सम्पदाओं का सदुपयोग नहीं कर पाता, जिससे उपलब्धियाँ भी विपत्तियों का कारण बन जाती हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक ने विकास की अंतिम सीढ़ी किसे कहा है और इसका धर्म, तप और योग से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर: लेखक ने भाव-संवेदना को मर्माहत कर देने वाली करुणा के विस्तार को ही विकास की अंतिम सीढ़ी

कहा है, जिसे 'आन्तरिक उत्कृष्टता' भी कहते हैं। इसी संवेदना के जागृत होने पर सेवा, साधना बन जाती है और धर्म-धारणा का निर्वाह होता है। तपश्चर्या और योग साधना का अंतिम लक्ष्य भी संवेदना जगाकर देवत्व का साक्षात्कार करना है।

2. प्रश्न: "लेने के देने पड़ रहे हैं" - इस मुहावरे का प्रयोग लेखक ने आधुनिक प्रगति के संदर्भ में कैसे किया है?

उत्तर: लेखक का आशय है कि मनुष्य ने विज्ञान और बुद्धि के बल पर अभूतपूर्व सुविधाएँ और साधन तो जुटा लिए हैं, लेकिन भाव-संवेदना की कमी के कारण वह उनका सदुपयोग नहीं कर पा रहा। परिणाम यह हो रहा है कि यही प्रगति प्रदूषण, युद्ध, और सामाजिक विघटन जैसे विनाशकारी संकटों को जन्म दे रही है, यानी एक रुपये के लाभ के बदले सौ का घाटा हो रहा है।

3. प्रश्न: धर्म और ईश्वर के बारे में आधुनिक बुद्धिवाद की नई व्याख्या क्या है और यह क्यों चिंताजनक है?

उत्तर: आधुनिक बुद्धिवाद धर्म को 'अंधविश्वासों का जमघट' और 'अफीम की गोली' मानता है। कुछ ने तो यहाँ तक कहना शुरू कर दिया है कि 'ईश्वर मर गया है या उसे मार दिया जाना चाहिए'। यह चिंताजनक है क्योंकि यह मान्यता मनुष्य को भाव-संवेदना और नैतिकता के स्रोत से दूर करती है, जिससे वह केवल भौतिक उपलब्धियों के पीछे भागता है और अंततः अपना ही विनाश करता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: मनुष्य की बुद्धि संकटों का कारण और समाधान खोजने में सक्षम है, फिर भी वह "साँप-छछून्दर" जैसी स्थिति में क्यों फँस गया है? इस स्थिति से उबरने का मौलिक उपाय क्या है?

उत्तर: मनुष्य की बुद्धि संकटों का कारण और समाधान खोजने में सक्षम है, लेकिन वह भाव-संवेदना के अभाव के कारण सही दिशा में सोच नहीं पा रहा है। वह प्रगति के परिणामों को न तो पूरी तरह निगल पा रहा है और न ही छोड़ पा रहा है। इस स्थिति से उबरने का मौलिक उपाय केवल भाव-संवेदनाओं को पुनः जाग्रत करना है। केवल भाव-संवेदना से भरे व्यक्ति ही उपलब्धियों के सदुपयोग की रीति-नीति समझ सकते हैं और विनाश को विकास में बदल सकते हैं।

2. प्रश्न: क्या समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता अपने आप में पर्याप्त हैं? यदि नहीं, तो क्यों और इनसे ऊपर कौन-सी शक्ति है?

उत्तर: नहीं, ये तीनों अपने आप में पर्याप्त नहीं हैं। स्रोत के अनुसार, यह सुनिश्चित है कि इन्हीं तीन क्षेत्रों में फैली अराजकता ने आज के संकट खड़े किए हैं। इन तीनों से ऊपर भाव-संवेदना की शक्ति है, जो एक दैवी अनुदान है। जब यह मनुष्य की स्वच्छ अन्तरात्मा पर उतरती है, तो उसे देवत्व प्रदान करती है और अनेकानेक दैवी तत्त्वों को उभारती है। इसके बिना समर्थता और सम्पन्नता भी विनाश का कारण बन जाती है।

अध्याय 2: विभीषिकाओं के पीछे झाँकती यथार्थता

इस अध्याय में लेखक ने वासना, तृष्णा और अहंकार को वर्तमान समस्याओं का मूल कारण बताया है और इनसे उबरने के लिए यथार्थता को समझने पर बल दिया है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अत्यधिक धन कमा लेने पर भी उसे एकाकी पचाया क्यों नहीं जा सकता?

उत्तर: क्योंकि मनुष्य के पेट का विस्तार सीमित है। नियत मात्रा से अधिक खाया गया भोजन, चाहे कितना भी स्वादिष्ट हो, दस्त, उलटी जैसे संकट ही खड़े करेगा।

2. प्रश्न: वासना और तृष्णा की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर: वासना और तृष्णा की तुलना एक ऐसी चौड़ी और गहरी खाई से की गई है, जिसे कुबेर की सम्पदा से भी नहीं पाटा जा सकता। यह रेगिस्तान की जलन जैसी है, जो थोड़े से साधनों से नहीं बुझती, बल्कि और भड़क जाती है।

3. प्रश्न: दिग्भ्रान्त मनुष्य स्वयं को कहाँ तक सीमित मान बैठा है?

उत्तर: दिग्भ्रान्त मनुष्य स्वयं को केवल शरीर तक सीमित मान बैठा है, क्योंकि उसे प्रत्यक्ष रूप में केवल वही दिखाई देता है।

4. प्रश्न: गीताकार ने योगी और दुनिया के बारे में क्या कहा है?

उत्तर: गीताकार ने कहा है कि जब दुनिया (मोह में) सोती है, तब योगी जागते हैं।

5. प्रश्न: यदुवंशियों का नाश कैसे हुआ था?

उत्तर: अहंकारी यदुवंशी किसी बाहरी आक्रमण से नहीं, बल्कि आपस में ही लड़-मरकर समाप्त हो गए थे।

6. प्रश्न: गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने का श्रेय किसे दिया जाता है?

उत्तर: गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने का श्रेय अकेले भगीरथ के पुरुषार्थ को दिया जाता है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक ने उन्मादी नदी का उदाहरण देकर क्या समझाने का प्रयास किया है?

उत्तर: लेखक ने उन्मादी नदी का उदाहरण देकर यह समझाया है कि जिस प्रकार तटबंध तोड़कर बहने वाली बाढ़ अनर्थ करती है, उसी प्रकार मनुष्य की सीमित ऊर्जा और साधनों का उच्छृंखल उपयोग विनाशकारी होता है। नदी इसे अपना अहंकार-प्रदर्शन मान सकती है, पर उसकी हमेशा निंदा ही होगी। इसी तरह, अनियंत्रित वासना और तृष्णा केवल विनाश लाती हैं।

2. प्रश्न: "मन के छुपे रुस्तम" का क्या अर्थ है और वह मनुष्य को कैसे दिग्भ्रान्त करता है?

उत्तर: "मन का छुपा रुस्तम" एक यक्ष या राक्षस की तरह है जो अदृश्य रहकर मनुष्य के भीतर कौतुक-कौतूहल

पैदा करता रहता है। इस व्यामोह में फँसकर मनुष्य अपनी चिंतन क्षमता गँवा देता है और अतृप्त इच्छाओं (तृष्णा) के पीछे भटकता रहता है। इसी के कारण वह अभाव, उद्विग्नता और चिंता के जाल में फँसकर रह जाता है।

3. प्रश्न: वर्तमान समय की तुलना एक विशालकाय पागलखाने से क्यों की गई है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, जब मूर्खतापूर्ण उन्माद सामूहिकता के साथ जुड़ जाता है, तो स्थिति एक विशालकाय पागलखाने जैसी हो जाती है। इसमें रोगी (लोग) एक-दूसरे को उकसाने, भड़काने और सताने में लगे रहते हैं, जिससे अंत में सभी को केवल हानि ही उठानी पड़ती है। यह आज के समाज की स्थिति को दर्शाता है, जहाँ लोग बिना सोचे-समझे विनाशकारी प्रचलनों का अनुसरण कर रहे हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मानवी गरिमा को निगलने वाला "त्रिदोष" क्या है और इसका परिणाम क्या हो सकता है? इससे बचने की क्या आशा है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मानवी गरिमा को निगलने वाला "त्रिदोष" है - उद्दीप्त वासना, अनियंत्रित तृष्णा और उन्मादी अहंकारिता। यह त्रिदोष एक महाग्राह (मगरमच्छ) की तरह मानवी गरिमा को निगल रहा है, जिससे महाविनाश या प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इससे बचने की आशा इस बात में है कि जैसे एक छोटा दीपक घने अंधकार को मिटा देता है, वैसे ही मनुष्य में उत्कृष्टता का उदय होने पर यह भयंकर वातावरण भी बदल सकता है।

2. प्रश्न: वर्तमान समय में जब सर्वत्र पतन और पराभव दिखाई दे रहा है, तब भी लेखक सृजन और सकारात्मक परिवर्तन के प्रति आशावान क्यों है? अपने उत्तर को भगीरथ और फरहाद के उदाहरणों से स्पष्ट करें।

उत्तर: लेखक आशावान है क्योंकि वह मानता है कि जब कोई व्यक्ति प्राणपण से सृजन की सदाशयता के लिए पुरुषार्थ करता है, तो उसके परिणाम चमत्कारी होते हैं। जैसे फरहाद ने शीरी के लिए अकेले पहाड़ खोदकर नहर निकाल दी और भगीरथ अकेले ही गंगा को पृथ्वी पर ले आए, उसी प्रकार निष्ठावान पुरुषार्थ आज भी असंभव को संभव बना सकता है। अतः, यदि मनुष्य में उत्कृष्टता का उदय हो, तो वह वर्तमान के विनाशकारी प्रवाह को रोककर सृजन की नहरें निकाल सकता है।

अध्याय 3: महान् प्रयोजन के श्रेयाधिकारी बनें

इस अध्याय में लेखक ने महान् उद्देश्यों के लिए अकेले चलने के साहस और उसके परिणामस्वरूप मिलने वाले दैवी और सामाजिक सहयोग पर प्रकाश डाला है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: कवि टैगोर ने सत्प्रयोजन की दिशा में काम करने वालों को क्या नीति अपनाने की सलाह दी है?

उत्तर: कवि टैगोर ने "एकला चलो रे" की नीति अपनाने की सलाह दी है, जिसका अर्थ है कि यदि कोई साथ न दे तो भी अच्छे उद्देश्य के लिए अकेले ही चल पड़ना चाहिए।

2. प्रश्न: गीताकार के अनुसार, जब संसार मोह निद्रा में सो रहा हो, तब योगी को क्या करना चाहिए?

उत्तर: गीताकार के परामर्शानुसार, जब सारा संसार सो रहा हो, तब भी योगी को प्रचलन के विपरीत जागते रहना चाहिए और जनसुरक्षा की हिम्मत जुटानी चाहिए।

3. प्रश्न: निष्ठा भरे पुरुषार्थ का क्या प्रभाव होता है?

उत्तर: निष्ठा भरे पुरुषार्थ में अद्भुत आकर्षण होता है। यह अच्छे और बुरे, दोनों तरह के कार्यों में प्रभाव दिखाता है। शुरुआत में अकेले चलने पर भी धीरे-धीरे साथी-सहयोगी मिलते और बढ़ते चले जाते हैं।

4. प्रश्न: दुराचारी लोग जब अपने सशक्त गिरोह बना सकते हैं, तो सृजन संकल्प वालों को एकाकी क्यों नहीं रहना पड़ेगा?

उत्तर: क्योंकि जब बुरे लोग संगठित हो सकते हैं, तो सृजन संकल्प के धनी, प्रामाणिक और प्रतिभाशाली लोगों को भी अंततः साथी मिल ही जाते हैं। उनकी निष्ठा दूसरों को आकर्षित करती है।

5. प्रश्न: भगीरथ ने जब लोकमंगल के लिए गंगा को पृथ्वी पर बुलाया, तो उनकी सहायता किसने की?

उत्तर: जब भगीरथ ने गंगा को बुलाया, तो ब्रह्मा-विष्णु ने गंगा को प्रेरित करके भेजा और शिवजी उसे धारण करने के लिए तत्काल तैयार हो गए।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वर्तमान समय की विपन्नताएँ कैसी दिखती हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, विपन्नताएँ इन दिनों सुरसा जैसा मुँह बनाए खड़ी दिखती हैं और आतंक रावण के स्तर का है।

7. प्रश्न: युग परिवर्तन में दृश्यमान भूमिका किसकी होगी और उसके पीछे अदृश्य योगदान किसका रहेगा?

उत्तर: युग परिवर्तन में दृश्यमान भूमिका तो प्रामाणिक प्रतिभाओं की ही रहेगी, पर उसके पीछे अदृश्य सत्ता का असाधारण योगदान रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे कठपुतलियों के नाच के पीछे बाजीगर की उँगलियाँ होती हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक ने माचिस की तीली और दीपक का उदाहरण देकर क्या समझाया है?

उत्तर: लेखक ने समझाया है कि जैसे घने अंधकार से लड़ने के लिए माचिस की एक तीली खुद को जलाने का साहस करती है, तो दीपक भी उसके बुझने से पहले जल उठता है। इसी तरह, जब कोई व्यक्ति महान उद्देश्य के लिए अकेले शुरुआत करता है, तो आरम्भ में भले ही उसका उपहास हो, पर बाद में उसे देखकर दूसरे भी प्रेरित होते हैं और एक विशाल कारवाँ बन जाता है।

2. प्रश्न: "नया इनसान बनाने, नया संसार बसाने और नया भगवान् बुलाने" जैसी प्रक्रिया असम्भव क्यों लगती है, और इस पर विजय कैसे पाई जा सकती है?

उत्तर: यह प्रक्रिया असम्भव इसलिए लगती है क्योंकि आज के समय में व्यक्ति अपना छोटा-सा घर-परिवार भी नहीं सँभाल पाता, तो पूरी दुनिया को बदलना बहुत दुरूह कार्य लगता है। इस पर विजय उस परम सत्ता के सहयोग पर विश्वास करके पाई जा सकती है, जो इस सृष्टि को बदलने का काम निरन्तर करती रहती है। मनुष्य के लिए जो कठिन है, वह भगवान की छत्रछाया में सम्भव हो जाता है।

3. प्रश्न: युग साधना क्या है और परमेश्वर के महान प्रयोजन का श्रेय किसे मिलेगा?

उत्तर: युग साधना अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार विनिर्मित करना है कि वह परम सत्ता के साथ जुड़ सके। जिस प्रकार हवाई जहाज के लिए हवाई पट्टी और शासनाध्यक्ष के लिए उपयुक्त स्थान पहले से तैयार करना पड़ता है, उसी प्रकार परमेश्वर के महान प्रयोजन का श्रेय उन जागरूक, आदर्शवादी और प्रतिभाशाली लोगों को मिलेगा, जिन्होंने अपनी अन्तरात्मा को दैवी अनुदान ग्रहण करने योग्य स्वच्छ बना लिया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता की जय-जयकार होने के बावजूद, आज के संकटों का मूल कारण इन्हीं क्षेत्रों में फैली अराजकता क्यों है? इनसे ऊपर कौन-सी चौथी शक्ति है और वह कैसे काम करती है?

उत्तर: समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता अपने आप में संकट का कारण नहीं हैं, बल्कि इन क्षेत्रों में फैली अराजकता (यानी इनका अनियंत्रित और स्वार्थपूर्ण उपयोग) आज के संकटों का मूल कारण है। इन तीनों से ऊपर भाव-संवेदना की चौथी शक्ति है। यह एक दैवी अनुदान है जो मनुष्य की स्वच्छ अन्तरात्मा पर उतरकर उसे देवदूत स्तर का बना देती है। यह शक्ति व्यक्ति को भौतिक आकर्षणों से बचाती है और उसके भीतर अनेकानेक दैवी तत्त्वों को उभारती है।

2. प्रश्न: "सम्भवामि युगे-युगे" के वचन का वर्तमान संदर्भ में क्या महत्त्व है? लेखक क्यों मानते हैं कि परम सत्ता इस विषम वेला में परिवर्तन अवश्य करेगी?

उत्तर: "सम्भवामि युगे-युगे" का अर्थ है कि भगवान हर युग में (विशेषकर संकट के समय) अवतरित होते हैं। वर्तमान संदर्भ में, जब समस्त संसार पर विपन्नता छाई हुई है, तो लेखक का मानना है कि भगवान अपने वचन के अनुसार इस अँधेरे को उजाले में बदलने के लिए निश्चित रूप से अपनी भूमिका निभाएँगे। जिसका प्रिय विनोद ही जीर्ण-शीर्ण को नया बनाना है, उसके लिए इस युग को बदलना कोई कठिन कार्य नहीं है। यह परिवर्तन प्रामाणिक प्रतिभाओं के माध्यम से होगा, जिन्हें अदृश्य सत्ता से प्रेरणा और शक्ति मिलेगी।

अध्याय 4: संवेदना का सरोवर सूखने न दें

इस अध्याय में भाव-संवेदना के सूख जाने को सभी समस्याओं का मूल कारण बताया गया है और मनुष्य को उसके निर्धारित बड़े कर्तव्यों का स्मरण कराया गया है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: मनुष्य, पशु-पक्षियों और कृमि-कीटकों से भी गया-बीता क्यों हो गया है?

उत्तर: क्योंकि पशु-पक्षी भी अपनी शारीरिक आवश्यकता पूरी करने के बाद प्रकृति के कार्यों में लग जाते हैं, वे अनावश्यक संग्रह और उपभोग में अति नहीं करते। लेकिन मनुष्य अपनी विशिष्टता को भूलकर केवल संग्रह और उपभोग की आतुरता में अनर्थ कर रहा है।

2. प्रश्न: भरे पेट होने पर सिंह और बाघ का व्यवहार कैसा होता है?

उत्तर: जब सिंह और बाघ का पेट भरा होता है, तो वे अपने पास चरने वाले छोटे जानवरों को भी परेशान नहीं करते।

3. प्रश्न: मनुष्य के लिए कौन-से बड़े कर्तव्य निर्धारित हैं?

उत्तर: मनुष्य के लिए संयम साधना द्वारा आत्म-परिष्कार करना और विश्व उद्यान का माली बनकर सर्वत्र शोभा और सुंदरता का वातावरण बनाना जैसे बड़े कर्तव्य निर्धारित हैं।

4. प्रश्न: भाव-संवेदनाओं का स्रोत सूख जाने पर मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है?

उत्तर: भाव-संवेदनाओं का स्रोत सूख जाने पर मनुष्य सूखे तालाब की तरह शुष्क, नीरस और निष्ठुर हो जाता है। उसे केवल अपना स्वार्थ ही दिखाई देता है। यह स्थिति शरीर से चेतना निकल जाने पर बची लाश जैसी होती है।

5. प्रश्न: लेखक ने संवेदनाहीनों की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने संवेदनाहीनों की तुलना प्रेतों, नर-पिशाचों, ब्रह्म राक्षसों और दुर्दान्त दैत्यों से की है, क्योंकि वे जीवित होते हुए भी निर्जीव और निष्ठुर व्यवहार करते हैं।

6. प्रश्न: संवेदनाहीन व्यक्ति हिरण्याक्ष दैत्य की तरह क्या कर सकता है?

उत्तर: संवेदनाहीन व्यक्ति, जिसका 'स्व' ही सब कुछ है, हिरण्याक्ष दैत्य की तरह दुनिया की सारी सम्पदा समेटकर उसे समुद्र में छिपाकर निरर्थक बना सकता है, भले ही इससे दूसरों का कितना भी अहित हो।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मनुष्य की "उलटी रीति" का मूल कारण क्या है और यह उसे कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: इस "उलटी रीति" (अनावश्यक संग्रह और उच्छृंखल उपभोग) का मूल कारण भाव-संवेदनाओं का स्रोत

सूख जाना है। इसके कारण मनुष्य में संकीर्ण स्वार्थपरता पैदा होती है और उसे सिर्फ अपना वैभव और उपभोग ही सब कुछ लगता है। वह यह समझ ही नहीं पाता कि दूसरों की सेवा-सहायता में भी आत्मसंतोष और सम्मान जैसी उपलब्धियाँ मिल सकती हैं।

2. प्रश्न: संवेदना को आत्मीयता के रूप में कैसे विकसित किया जा सकता है और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर: संवेदना जब विकसित होती है तो आत्मीयता का रूप ले लेती है। तब मनुष्य दूसरों के दुःख को अपना दुःख और दूसरों के सुख को अपना सुख मानने लगता है। यदि यह आत्मभाव पूरे जनसमुदाय और अन्य प्राणियों तक फैल जाए, तो कोई भी ऐसा व्यवहार नहीं करेगा जिससे किसी के अधिकारों का हनन हो या किसी का शोषण हो। इससे समाज में सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

3. प्रश्न: क्या नर-पशु और संवेदना शून्य मनुष्य एक ही हैं? यदि नहीं, तो क्यों?

उत्तर: नहीं, दोनों एक नहीं हैं। लेखक के अनुसार, संवेदना शून्यों को नर-पशु भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पशुओं की भी अपनी प्राकृतिक मर्यादाएँ होती हैं और वे प्राकृतिक अनुशासन का उल्लंघन नहीं करते। जबकि संवेदना शून्य मनुष्य किसी भी मर्यादा को नहीं मानता और केवल अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है, इसलिए उसे नर-पिशाच या दैत्य कहना अधिक उपयुक्त है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: "जीवितों और मृतकों की अलग-अलग दुनिया है" - इस कथन का प्रयोग लेखक ने सम्वेदनशील और संवेदनाहीन लोगों के बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए कैसे किया है?

उत्तर: लेखक ने इस कथन का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया है। उनके अनुसार, मृतक (मुरदे) श्मशान में पड़े रहते हैं और दूसरों को डराते हैं; वे किसी के विलाप पर प्रतिक्रिया नहीं देते। ठीक इसी प्रकार, **संवेदनाहीन व्यक्ति जीवित होते हुए भी मृतक के समान होते हैं।** वे दूसरों के दुःख-दर्द के प्रति निष्ठुर और उदासीन रहते हैं और उनकी गतिविधियाँ प्रेतों जैसी विनाशकारी होती हैं। इसके विपरीत, जीवित (सम्वेदनशील) लोग आवश्यक और सृजनात्मक कार्यों में लगे रहते हैं। इस प्रकार, सम्वेदनशीलता ही सच्चे अर्थों में जीवित होने का प्रमाण है।

2. प्रश्न: समाज की अगणित समस्याओं का मूल स्रोत कहाँ है और उनका स्थायी समाधान कैसे संभव है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सभी समस्याओं का मूल स्रोत व्यक्ति के भीतर **भाव-संवेदनाओं का सूख जाना** और उसके कारण उपजी **संकीर्ण स्वार्थपरता** है। जब व्यक्ति केवल अपने और गिने-चुने अपनों तक सीमित हो जाता है, तो वह दूसरों की चिंता नहीं कर सकता और अनाचार करने लगता है। जब बहुसंख्यक लोग ऐसा करते हैं, तो वातावरण विक्षुब्ध हो जाता है। इसका स्थायी समाधान केवल **भाव-संवेदना को पुनः जीवंत और सक्रिय**

करने में है। यदि संवेदना और आत्मीयता का भाव विस्तृत हो जाए, तो सृजन और सहयोग के आधार पर सर्वत्र उत्थान और कल्याण का वातावरण बन सकता है।

अध्याय 5: समस्याओं की गहराई में उतरें

इस अध्याय में लेखक ने यह तर्क दिया है कि समाज की समस्याओं का मूल कारण साधनों का अभाव नहीं, बल्कि मनुष्य की मनःस्थिति, उसकी अनगढ़ आदतें और आत्मविश्वास की कमी है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: समाज विज्ञानी आमतौर पर समाज की कठिनाइयों का मुख्य कारण किसे मानते हैं?

उत्तर: समाज विज्ञानी आमतौर पर अभावग्रस्तता, यानी अशिक्षा, दरिद्रता और अस्वस्थता को कठिनाइयों का मुख्य कारण मानते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, दरिद्रता का असली कारण क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, दरिद्रता का असली कारण आलस्य, प्रमाद और दीनता-हीनता की मनःस्थिति है, न कि अवसरों की कमी।

3. प्रश्न: अशिक्षा का वास्तविक कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: अशिक्षा का वास्तविक कारण शिक्षा के महत्त्व को न समझना और उसके लिए उत्साह की कमी है।

4. प्रश्न: शारीरिक और मानसिक समर्थता कैसे प्राप्त की जा सकती है?

उत्तर: यह समर्थता केवल संयम, साधना और सुनियोजित दिनचर्या अपनाने से ही प्राप्त हो सकती है, न कि व्यायामशालाओं या टॉनिक से।

5. प्रश्न: लोगों में यह भ्रम क्यों प्रचलित हो गया है कि केवल सम्पदा से ही प्रगति हो सकती है?

उत्तर: यह भ्रम धनियों के ठाठ-बाट और गुलछर्रे उड़ाते हुए जीवन को देखकर पनपा है, जिससे लोग मान लेते हैं कि वे सुखी और समुन्नत भी हैं।

6. प्रश्न: जब साधन कम थे, तब मनुष्य अधिक सुखी क्यों था?

उत्तर: क्योंकि उस समय विकसित भाव-चेतना के आधार पर वह थोड़ी उपलब्धियों का भी श्रेष्ठतम उपयोग कर लेता था और मिल-जुलकर रहता था। ऐसे ही वातावरण को सतयुग कहा गया है।

7. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सुधार कहाँ करना आवश्यक है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सुधार तलहटी में, यानी मनुष्य की भावनाओं और संवेदनाओं के क्षेत्र में करना आवश्यक है, क्योंकि दुर्भावनाओं से दुर्बुद्धि ही पनपेगी।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: बाहरी अनुदान या सहायता "फूटे घड़े में पानी भरने" जैसा क्यों है?

उत्तर: यह इसलिए है क्योंकि यदि व्यक्ति की आदतें (जैसे दुर्व्यसन) अनगढ़ हैं और उसमें पुरुषार्थ की भावना नहीं है, तो उसे दी गई कोई भी सहायता व्यर्थ चली जाएगी। कुबेर की सम्पदा भी ऐसे व्यक्ति के पास नहीं ठहर सकती, क्योंकि मौलिक समस्या साधनों की नहीं, व्यक्ति के चरित्र की है।

2. प्रश्न: लेखक यह क्यों कहते हैं कि बड़ी हुई समृद्धि ने मनुष्य से वह सब कुछ छीन लिया है जो उसने लाखों वर्षों में अर्जित किया था?

उत्तर: लेखक का आशय सभ्यता और सुसंस्कारिता से है। उनका तर्क है कि जब साधन कम थे, तब भाव-संवेदना के कारण समाज में सुख, संतोष और सहयोग था। आज बड़ी हुई समृद्धि ने उस भाव-संवेदना को नष्ट कर दिया है, जिससे मनुष्य स्वार्थी और दुखी हो गया है, भले ही उसके पास भौतिक साधन अधिक हों।

3. प्रश्न: प्रगति और दुर्गति के बीच क्या सम्बन्ध है? वर्तमान प्रगति दुर्गति का कारण क्यों बन गई है?

उत्तर: प्रगति अपने आप में बुरी नहीं है, लेकिन जब उसका आधार भाव-संवेदना न होकर केवल बुद्धि और स्वार्थ होता है, तो वह दुर्गति का कारण बन जाती है। वर्तमान प्रगति के साथ यही हुआ है। भाव-संवेदना की कमी के कारण समृद्धि और चतुरता का उपयोग विनाशकारी कार्यों में हो रहा है, जिससे सर्वतोमुखी विपन्नता ही हाथ लग रही है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: "मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है" - इस कथन का अध्याय के सन्दर्भ में विश्लेषण करें। समस्याओं के समाधान के लिए बाहरी प्रयासों की अपेक्षा आंतरिक सुधार क्यों अधिक महत्वपूर्ण है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि हमारी बाहरी परिस्थितियाँ (जैसे गरीबी, अशिक्षा) हमारी आंतरिक स्थिति (सोच, आदतें, आत्मविश्वास) का परिणाम हैं। लेखक तर्क देते हैं कि बाहरी प्रयास जैसे आर्थिक अनुदान देना तब तक विफल रहेंगे, जब तक व्यक्ति की दीनता-हीनता की मानसिकता को नहीं बदला जाता। यदि व्यक्ति में आत्मविश्वास और पुरुषार्थ जगा दिया जाए, तो वह अपने बलबूते ही समर्थ हो सकता है। इसलिए, परिस्थितियों को सुधारने के लिए पहले जनसमुदाय की मनःस्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को जगाना आवश्यक है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, समाज सुधार की वर्तमान योजनाओं में क्या "मौलिक भूल" हो रही है और इसका स्थायी समाधान क्या है?

उत्तर: मौलिक भूल यह है कि मनुष्य को दीन, दुर्बल और असहाय मानकर उसकी अनगढ़ आदतों को सुधारने की बजाय, उसे अधिक साधन उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। लम्बे समय तक ऐसा करने पर भी स्थिति नहीं बदलती। स्थायी समाधान मनुष्य के भीतर की भाव-संवेदनाओं को परिष्कृत करने में है। जब भावनाएँ शुद्ध होंगी, तो बुद्धि सही दिशा में काम करेगी और सद्बुद्धि से ही उपलब्ध साधनों का सदुपयोग

संभव होगा, जिससे वास्तविक प्रगति होगी।

अध्याय 6: समग्र समाधान — मनुष्य में देवत्व के अवतरण से

यह अध्याय इस बात पर केंद्रित है कि सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान मनुष्य के अंतःकरण में श्रद्धा और संवेदना को जगाकर देवत्व का उदय करना है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पदार्थ-सम्पदा का दुरुपयोग होने पर क्या परिणाम होता है?

उत्तर: दुरुपयोग होने पर अमृत भी विष बन जाता है, जैसे कलम बनाने वाला चाकू किसी के प्राण भी ले सकता है।

2. प्रश्न: मनुष्य का मस्तिष्क सही होते हुए भी वह उत्कृष्टता क्यों नहीं अपना पाता?

उत्तर: क्योंकि मानसिकता अंतःकरण में स्थित श्रद्धा और संवेदना रूपी रानी की चेरी (दासी) होती है। यदि अंतःकरण में श्रद्धा और सरसता नहीं है, तो मस्तिष्क अनर्थ की ओर ही प्रवृत्त होता है।

3. प्रश्न: देवमानव या देवदूत कौन कहलाते हैं?

उत्तर: जो लोग अपनी सुविधाओं और इच्छाओं पर अंकुश लगाकर अपनी क्षमता को लोकमंगल और आत्म-परिष्कार के लिए समर्पित कर देते हैं, वे ही देवमानव या देवदूत कहलाते हैं।

4. प्रश्न: आज जनमानस पर कौन-सी भौतिक दृष्टि छाई हुई है?

उत्तर: आज जनमानस पर संकीर्ण स्वार्थपरता और जो कुछ भी उपलब्ध हो, उसे हड़प जाने या बिखेर देने की भौतिक दृष्टि छाई हुई है।

5. प्रश्न: प्रदूषण, युद्धोन्माद और अपराधों का मूल कारण क्या है?

उत्तर: इन सभी संकटों का मूल कारण उपलब्धियों को दानवी स्वार्थपरता के लिए नियोजित किया जाना है।

6. प्रश्न: क्या विज्ञान और बुद्धिवाद को आज के अनर्थ के लिए दोषी ठहराया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, दोष विज्ञान या बुद्धिवाद का नहीं है। दोष उस विकृत मानसिकता का है जिसने इन उपलब्धियों का दुरुपयोग किया है।

7. प्रश्न: भगवान मनुष्य से कैसा सम्बन्ध रखना चाहता है?

उत्तर: भगवान मनुष्य से वैसे ही घनिष्ठ सम्बन्ध रखने के लिए लालायित रहता है, जैसे एक माँ अपने बच्चे को गोद में उठाने के लिए लालायित रहती है।

8. प्रश्न: दिव्य संवेदना क्या है?

उत्तर: अंतःकरण की श्रद्धा और दिव्य चेतना के संयोग से जो उपलब्धि होती है, उसे दिव्य संवेदना कहते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: "परमार्थ ही सच्चा स्वार्थ बन जाता है" - यह स्थिति कब और कैसे उत्पन्न होती है?

उत्तर: यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति के अंतःकरण में दिव्य संवेदना का उदय होता है। ऐसा होने पर उसे हर किसी में अपना ही रूप दिखाई देने लगता है और समग्र लोकचेतना उसके भीतर घनीभूत हो जाती है। तब उसे दूसरों की सेवा और सुविधा में ही अपनी प्रसन्नता का अनुभव होता है, और परमार्थ उसके लिए स्वार्थ जैसा स्वाभाविक बन जाता है।

2. प्रश्न: लेखक ने विकृतियों की जड़ कहाँ बताई है और उसका सुधार कैसे संभव है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, विकृतियाँ केवल ऊपर (व्यवहार में) दिखाई देती हैं, पर उनकी जड़ अंतःकरण की कुसंस्कारिता में होती है। इसका सुधार तभी संभव है जब अंतःकरण रूपी स्थान को साफ-सुथरा बनाया जाए, ताकि उसमें भगवत् सत्ता का अवतरण हो सके। यानी, श्रद्धा और संवेदना को जगाकर ही इन जड़ों को सुधारा जा सकता है।

3. प्रश्न: "मनुष्य में देवत्व का उदय" और "धरती पर स्वर्ग का अवतरण" में क्या सम्बन्ध है?

उत्तर: जब किसी एक व्यक्ति के अंतःकरण में भगवत् सत्ता उतरती है, तो उसे "मनुष्य में देवत्व का उदय" कहते हैं। और जब यह प्रक्रिया व्यापक हो जाती है, यानी बहुत से लोग देवत्व को उपलब्ध हो जाते हैं, तो समाज में सर्वत्र शालीनता और सद्भाव का वातावरण बन जाता है। इसी सामूहिक परिवर्तन को "धरती पर स्वर्ग का अवतरण" कहा गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, आज की समस्याओं का "समग्र समाधान" क्या है? यह प्रचलित समाधानों (जैसे सम्पदा, सत्ता) से किस प्रकार भिन्न और श्रेष्ठ है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, समग्र समाधान है मनुष्य के अंतःकरण में देवत्व का अवतरण, जो श्रद्धा और संवेदना को जगाने से होता है। यह प्रचलित समाधानों से श्रेष्ठ है क्योंकि सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा जैसी बाहरी शक्तियाँ, जब संवेदनाहीन व्यक्ति के हाथ में आती हैं, तो वे विनाश का कारण बनती हैं। ये शक्तियाँ केवल उपकरण हैं। जबकि देवत्व का अवतरण व्यक्ति के मूल केंद्र, यानी उसकी चेतना को ही बदल देता है। एक बार चेतना उत्कृष्ट हो जाए, तो वह उपलब्ध साधनों का केवल सृजनात्मक और कल्याणकारी उपयोग ही करेगा, जिससे समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी।

2. प्रश्न: मनुष्य भगवान के दुलार से मुँह क्यों मोड़े रहता है और उसे पाने के लिए क्या आवश्यक है? इस प्रक्रिया के परिणाम क्या होंगे?

उत्तर: मनुष्य वासना और तृष्णा रूपी खिलौनों में खेलने में इतना व्यस्त है कि वह उस दिव्य दुलार की ओर से

मुँह मोड़े रहता है, जिसे पाकर वह कृतकृत्य हो सकता था। उसे पाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने अंतःकरण रूपी स्थान को साफ-सुथरा करे, यानी उसे श्रद्धा और संवेदना से भरे। इस प्रक्रिया का परिणाम कायाकल्प जैसा होता है; व्यक्ति देवोपम स्थिति में पहुँच जाता है, उसका चिंतन और क्रियाकलाप केवल लोक-कल्याण के लिए नियोजित होता है, और वह महानता को उपलब्ध होता है।

अध्याय 7: बस एक ही विकल्प — भाव-संवेदना

इस अध्याय में लेखक यह स्थापित करते हैं कि वर्तमान समस्याओं को सुलझाने के लिए सम्पदा, सत्ता या प्रतिभा जैसे प्रचलित उपाय अपर्याप्त हैं और एकमात्र विकल्प जन-जन में भाव-संवेदना को जगाना है।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वर्तमान की अवांछनीयताओं से जूझने में प्रचलित उपाय अपर्याप्त क्यों हैं?

उत्तर: क्योंकि ये उपाय समस्याओं की जड़ तक नहीं पहुँचते। जैसे कुदाल से पहाड़ में सुरंग नहीं बनाई जा सकती, वैसे ही केवल धन या शिक्षा से गहरी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता।

2. प्रश्न: सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा जब अतिरिक्त मात्रा में जमा होती हैं, तो क्या होता है?

उत्तर: ये एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न कर देती हैं, जिसके प्रभाव में व्यक्ति उद्धत आचरण करने लगता है और अपनी उपलब्धियों को केवल अपने लाभ के लिए खर्च करता है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार प्रदूषण, आतंक और युद्धोन्माद जैसे अनर्थ किसने खड़े किए हैं?

उत्तर: ये अनर्थ सम्पन्न, बलिष्ठ और प्रतिभाशाली लोगों की एक छोटी सी चौकड़ी ने ही खड़े किए हैं।

4. प्रश्न: परिस्थितियों की जन्मदात्री किसे कहा गया है?

उत्तर: मनःस्थिति को ही परिस्थितियों की जन्मदात्री कहा गया है।

5. प्रश्न: मन और बुद्धि को दिशा-निर्देश कहाँ से मिलता है?

उत्तर: उन्हें दिशा-निर्देश अंतःकरण में स्थित भावनाओं, आकांक्षाओं और मान्यताओं से मिलता है, जिसे भाव-संवेदना कहते हैं।

6. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य का सुनिश्चित आधार क्या है?

उत्तर: इसका एकमात्र सुनिश्चित आधार यह है कि जन-जन की भाव-संवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श और उदात्त बनाया जाए।

7. प्रश्न: अनावश्यक सम्पन्नता की ललक का क्या परिणाम होता है?

उत्तर: यही ललक बेकाबू होकर अनर्थकारी संरचनाओं को जन्म देती है, जिससे समाज में अनाचार फैलता है।

8. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी को किस अवधि के रूप में वर्णित किया गया है?

उत्तर: इसे भाव-संवेदनाओं के उभरने और उभारने की अवधि के रूप में वर्णित किया गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: "मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है" — इस सूत्र के आधार पर परिस्थितियों को सुधारने का सही क्रम क्या होना चाहिए?

उत्तर: इस सूत्र के अनुसार, परिस्थितियों को सुधारने के लिए सबसे पहले जनसमुदाय की मनःस्थिति को सुधारना होगा। मनःस्थिति को सुधारने के लिए बुद्धि में विवेकशीलता को जगाना होगा। और चूँकि बुद्धि भी स्वतंत्र नहीं है, उसे अंतःकरण में स्थित भाव-संवेदना से प्रेरणा मिलती है, इसलिए सुधार का सही क्रम है: पहले भाव-संवेदना का परिष्कार, फिर मनःस्थिति का सुधार और अंततः परिस्थितियों में परिवर्तन।

2. प्रश्न: लेखक साधन-सम्पन्नता की निंदा क्यों नहीं कर रहे हैं, फिर भी वे सम्पन्न लोगों को वर्तमान संकटों के लिए उत्तरदायी क्यों ठहराते हैं?

उत्तर: लेखक साधन-सम्पन्नता की निंदा नहीं कर रहे, बल्कि उसके दुरुपयोग की आलोचना कर रहे हैं। वे मानते हैं कि सम्पन्न, बलिष्ठ और प्रतिभाशाली लोगों ने अपनी समर्थता का उपयोग लोक-कल्याण के बजाय संकीर्ण स्वार्थ के लिए किया, जिससे प्रदूषण, युद्ध और अनाचार जैसे संकट खड़े हुए। समस्या साधन में नहीं, बल्कि उसे उपयोग करने वाली संवेदनाहीन मानसिकता में है।

3. प्रश्न: "मिल-बाँटकर खाने की नीति" का क्या अर्थ है और यह आज के समय में क्यों आवश्यक है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि संसार में सम्पदा इतनी है कि यदि सभी लोग औसत नागरिक स्तर का जीवन जिँएँ और अपनी अतिरिक्त कमाई को पिछड़ों को उठाने और सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने में लगाएँ, तो सभी सुखी रह सकते हैं। यह आज इसलिए आवश्यक है क्योंकि अनावश्यक सम्पन्नता की लिप्सा ही शोषण, असमानता और अनाचार को जन्म दे रही है। इस नीति को अपनाने से ही समाज में संतुलन और शांति स्थापित हो सकती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय का शीर्षक "बस एक ही विकल्प — भाव-संवेदना" क्यों है? लेखक अन्य सभी विकल्पों को अपर्याप्त क्यों मानते हैं?

उत्तर: शीर्षक यह है क्योंकि लेखक तर्क देते हैं कि सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा जैसे अन्य सभी विकल्प समस्याओं के मूल कारण को संबोधित नहीं करते। ये तीनों शक्तियाँ जब संवेदनाहीन मनःस्थिति के साथ जुड़ती हैं, तो वे स्वयं समस्याओं को और बढ़ा देती हैं, जैसा कि आज हो रहा है। केवल भाव-संवेदना ही वह मूल शक्ति है जो मनुष्य के अंतःकरण को परिष्कृत करती है। जब अंतःकरण शुद्ध होता है, तो व्यक्ति देवमानव बन जाता है और अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग केवल सृजन और कल्याण के लिए करता है। इसलिए, स्थायी और वास्तविक समाधान के लिए भाव-संवेदना ही एकमात्र विकल्प है।

2. प्रश्न: अध्याय के अंत में लेखक माली की भूमिका निभाने का आह्वान क्यों करते हैं? "विश्व उद्यान" और "नन्दन वन" की उपमा का क्या महत्व है?

उत्तर: लेखक माली की भूमिका निभाने का आह्वान इसलिए करते हैं क्योंकि जैसे एक माली उपेक्षित बगीचे को सींचकर हरा-भरा बनाता है, वैसे ही हमें भी समाज के उपेक्षित क्षेत्र, यानी भाव-संवेदना को सींचना और विकसित करना है। "विश्व उद्यान" की उपमा यह दर्शाती है कि यह दुनिया एक बगीचे की तरह है जिसे सुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है। "नन्दन वन" (स्वर्ग का बगीचा) की समता का लक्ष्य यह दिखाता है कि यदि हम भाव-संवेदना को जगाने में सफल हो जाते हैं, तो यह धरती भी स्वर्ग के समान सुखद, सुंदर और सम्पन्न बन सकती है। यह एक महान और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य का प्रतीक है।

अध्याय 8: दानव का नहीं देव का वरण करें

यह अंतिम अध्याय मनुष्य को अपनी चयन करने की स्वतंत्रता का स्मरण कराता है और आग्रह करता है कि वह कठिनाइयों के लिए दूसरों को दोष देने के बजाय अपने भीतर की दानवी प्रवृत्तियों को छोड़कर दैवी संवेदनाओं का वरण करे।

सरल स्तर के प्रश्न (5-10)

1. प्रश्न: संसार में कौन-सी दो शक्तियाँ निरंतर काम करती रहती हैं?

उत्तर: सृजन (देव) और विनाश (दानव) की शक्तियाँ निरंतर काम करती रहती हैं।

2. प्रश्न: मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता क्यों कहा गया है?

उत्तर: क्योंकि उसे यह स्वतंत्रता मिली है कि वह देव या दानव में से किसी का भी वरण कर ले और उसी के अनुसार अपना भविष्य बनाए।

3. प्रश्न: मनुष्य की आम आदत क्या होती है?

उत्तर: मनुष्य की आम आदत है कि वह सफलताओं का श्रेय स्वयं लेता है, किन्तु असफलता का दोष दूसरों पर मढ़ देता है।

4. प्रश्न: कठिनाइयों के कारण और समाधान कहाँ खोजने चाहिए?

उत्तर: कठिनाइयों के कारण और समाधान अपने भीतर खोजने चाहिए।

5. प्रश्न: शरीर और मस्तिष्क को प्रेरणा और ऊर्जा कहाँ से मिलती है?

उत्तर: इन्हें प्रेरणा और ऊर्जा अंतःकरण की गहराई में स्थित आकांक्षाओं से मिलती है।

6. प्रश्न: कारखाने बनाने वालों ने हानिकारक परिणामों पर ध्यान क्यों नहीं दिया?

उत्तर: क्योंकि उनके अंतःकरण में अधिक कमाने की ललक प्रधान थी और उन्होंने सर्वसाधारण के हित को

अनदेखा कर दिया।

7. प्रश्न: अपराधी, आक्रामक और आतंकवादी बनने के लिए व्यक्ति को क्या करना पड़ता है?

उत्तर: उसे अपनी चेतना को इतना निष्ठुर बनाना पड़ता है कि वह दूसरों के कष्टों को पूरी तरह अनदेखा कर सके।

8. प्रश्न: संवेदनाओं में करुणा का समावेश होने पर क्या होता है?

उत्तर: दूसरे भी अपने जैसे दिखने लगते हैं और कोई भी किसी को हानि पहुँचाने की बात सोच भी नहीं सकता।

कठिन स्तर के प्रश्न (3-5)

1. प्रश्न: लेखक ने ज्वालामुखी और बादल का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: यह समझाने के लिए कि जैसे बड़ी घटनाओं का स्रोत गहराई में छिपा होता है (ज्वालामुखी का भूगर्भ में, बादल का समुद्र में), उसी प्रकार मनुष्य के कर्मों (क्रिया) और योजनाओं (मस्तिष्क) का मूल स्रोत उसके अंतःकरण में स्थित आकांक्षाएँ होती हैं। बाहरी परिस्थितियों को समझने के लिए इस आंतरिक उद्गम को समझना आवश्यक है।

2. प्रश्न: "कुरूप चेहरा दर्शाने के लिए दर्पण को आक्रोश का भाजन बनाया जा सकता है, पर इससे चेहरे पर छाई कुरूपता या कालिख को भगाया नहीं जा सकता।" — इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इस कथन का आशय है कि मनुष्य अपनी कठिनाइयों और असफलताओं के लिए बाहरी परिस्थितियों या दूसरे लोगों (दर्पण) को दोष देता है, जबकि असली समस्या उसके अपने भीतर (चेहरे की कुरूपता) होती है। दूसरों को दोष देने से समस्या का समाधान नहीं होता। समाधान के लिए हमें अपने भीतर झाँककर अपनी गलतियों और मान्यताओं को सुधारना होगा।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, विभिन्न सामाजिक बुराइयों (जैसे नशा, मांसाहार, नारी उत्पीड़न) के पीछे कौन-सी एक समान भावना काम कर रही है?

उत्तर: इन सभी बुराइयों के पीछे एक ही भावना काम कर रही है - संवेदना का अभाव और चरम स्वार्थपरता। नशा बेचने वाला दूसरों के विनाश की परवाह नहीं करता, मांसाहार करने वाला निरीह प्राणी की पीड़ा महसूस नहीं करता, और नारी का उत्पीड़न करने वाला पुरुष अपनी सहचरी के कष्टों के प्रति निष्ठुर हो जाता है। यदि इन सभी में संवेदना होती, तो वे ऐसा अनर्थ नहीं कर पाते।

कठिनतम स्तर के प्रश्न (2-3)

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, मनुष्य अपनी चेतना को "निष्ठुर" कैसे बना लेता है और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस प्रक्रिया को उलटने का क्या मार्ग है?

उत्तर: मनुष्य अपनी चेतना को निष्ठुर तब बना लेता है जब वह अपने लाभ या स्वार्थ को सर्वोपरि मानकर दूसरों के कष्टों और हितों को जान-बूझकर अनदेखा (दरगुजर) कर देता है। जैसे-जैसे वह ऐसा करता जाता है, उसकी संवेदना मर जाती है और वह अपराधी या आक्रामक बनने में भी संकोच नहीं करता। इसका समाज पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है क्योंकि ऐसे संवेदनाहीन लोग ही शोषण, युद्ध, अपराध और हर तरह के अनाचार को जन्म देते हैं। इस प्रक्रिया को उलटने का मार्ग है **आत्मभाव का विस्तार करना**। जब संवेदना और करुणा के माध्यम से व्यक्ति दूसरों को भी "अपने जैसा" समझने लगता है, तो वह किसी को हानि पहुँचाने में असमर्थ हो जाता है, क्योंकि यह उसे अपनी ही हानि जैसा महसूस होता है।

2. प्रश्न: "माता जैसा वात्सल्य हर आत्मा में उभर सकता है" - इस कथन का क्या तात्पर्य है? यदि यह सच हो जाए तो वर्तमान समस्याओं का समाधान कैसे हो जाएगा?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य है कि प्रत्येक आत्मा में स्वाभाविक रूप से करुणा, प्रेम और दूसरों का हित करने की क्षमता (वात्सल्य) मौजूद है, भले ही वह अभी स्वार्थ के नीचे दबी हो। यदि यह वात्सल्य जागृत हो जाए, तो व्यक्ति का दृष्टिकोण पूरी तरह बदल जाएगा। वह केवल दूसरों के हित के बारे में ही सोचेगा। ऐसी स्थिति में आज की कोई भी समस्या बच नहीं पाएगी, क्योंकि शोषण, अन्याय, घृणा, और संघर्ष जैसी सभी समस्याओं की जड़ संवेदनाहीनता और स्वार्थ है। जब हर व्यक्ति दूसरे के प्रति माता जैसा भाव रखेगा, तो समाज में केवल सहयोग, सेवा और प्रेम ही शेष रहेगा, और सभी उलझनें समाप्त हो जाएँगी।

सतयुग की वापसी: प्रमुख शब्दों की परिभाषाएँ

शब्द/शब्द समुच्चय - परिभाषा

- **भाव-संवेदना** - यह समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता से ऊपर की चौथी शक्ति है। यह एक दैवी अनुदान है जो मनुष्य की स्वच्छ अंतरात्मा पर उतरकर उसे देवदूत स्तर का बना देती है और उसके भीतर अनेकानेक दैवी तत्त्वों को उभारती है।
- **आंतरिक उत्कृष्टता** - भाव-संवेदना को मर्माहत कर देने वाली करुणा के विस्तार को ही आंतरिक उत्कृष्टता कहते हैं। यही विकास की अंतिम सीढ़ी है।
- **देवता** - वे आत्माएँ जिनकी प्रकृति और नियति 'देना' ही है, उन्हें इस धरती पर देवता कहा जाता है।
- **स्वर्ग** - वह क्षेत्र जहाँ देने की प्रकृति वाली आत्माओं (देवताओं) का संगठन और समन्वय होता है, उसे स्वर्ग के नाम से संबोधित किया जाता है।
- **सतयुग (का सामयिक संस्करण)** - सहृदय, सेवाभावी और उदारचेता लोगों द्वारा बनाया गया स्वर्ग जैसा कार्यक्षेत्र, जहाँ विकसित भाव-चेतना के आधार पर कम साधनों का भी श्रेष्ठतम उपयोग होता है और लोग मिल-जुलकर रहते हैं।
- **धर्म (के संबंध में नई व्याख्या)** - आधुनिक बुद्धिवाद के अनुसार, धर्म अंधविश्वासों का जमघट मात्र है, जिसे यथास्थिति स्वीकार करने के लिए गले के नीचे उतारी जाने वाली अफीम की गोली भर कहा जाना चाहिए।
- **मनःस्थिति** - यह परिस्थितियों की जन्मदात्री है, जिसे भावनाओं, आकांक्षाओं और मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशा मिलती है।
- **महानता** - यह वह उच्चस्तरीय व्यक्तित्व है जो अपनी सुविधाओं और इच्छाओं पर अंकुश लगाकर, उससे हुई बचत को लोकमंगल और आत्म-परिष्कार के लिए समर्पित करने पर उपलब्ध होता है।
- **देवमानव / देवदूत** - वे लोग जो महानता की स्थिति को चरितार्थ करते हैं, यानी अपनी क्षमता का कण-कण लोकमंगल के लिए समर्पित करते हैं।
- **युगसाधना** - अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार विनिर्मित करना कि वह परम सत्ता के साथ जुड़ सकने जैसी स्थिति में आ जाए।
- **दिव्य संवेदना** - अंतःकरण की श्रद्धा और दिव्य चेतना के संयोग से होने वाली उपलब्धि को दिव्य संवेदना कहते हैं, जो नए सिरे से, नए उल्लास के साथ उभरती है।
- **मनुष्य (अपने भाग्य का निर्माता)** - मनुष्य को यह स्वतंत्रता मिली है कि वह देव (सृजन) और दानव (विनाश) में से किसी का भी वरण कर सके और उसी के अनुसार अपना भविष्य बना सके, इसी कारण उसे अपने भाग्य का निर्माता कहा जाता है।

